दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक 10.09.2021

प्रकाशनार्थ

दिनांक 10 सितम्बर 2021 गोरखपुर। युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति व्याख्यान माला के उद्घाटन के अवसर पर **मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. राजेश सिंह, कुलपति, दी.द.उ.गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर** ने कहा कि इस महाविद्यालय का इतिहास और इसकी परम्पराएं विश्वविद्यालय से भी प्राचीन है और यह सत्य है कि विश्वविद्यालय ने इस महाविद्यालय से भौतिक और सांस्कृतिक विरासत को प्राप्त किया है। हमारी सनातन परम्परा और धर्म में अनेक ऐसे महापुरूषों के उपदेश हैं जो हमारे लिये सदैव अनुकरणीय है। इन्हीं परम्पराओं के समान नाथ पंथ की परम्परा जो सही अर्थों में त्याग की परम्परा का वाहक है। इसके मूल्य और आदर्श समाज के उत्थान तथा राष्ट्र के विकास के लिए सदा प्रासंगिक रहेंगे। इसीलिए मैने विश्वविद्यालय में नाथ पंथ परम्परा पर विभिन्न प्रकार के शोध, अुनसंधान और पीठ की स्थापना की। जिसने इस पंथ की विचारधाराओं को जन–जन तक पहुंचाया जा सके। नाथ पंथ में अनेक ऐसे योगी और सन्यासी हुए हैं। जिन्होनें भारतीय धर्म एवं संस्कृति के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। इस पंथ के आदर्श को किसी भाषा विशेष और राष्ट्र विशेष की सीमाओं में बांधा नही जा सकता है, क्योंकि विश्व के अनेक देश इसके अनुआयी हैं। इन्होंने स्वयं अपने ग्रंथ की चर्चा करते हुए कहा कि नाथपंथ पर मैने अंग्रेजी में एक पुस्तक लिखा है जो इसके विचारधाराओं को सूदूर देशों तक पहुंचाने में सक्षम होगा। इस ग्रंथ में आध्यात्म और विज्ञान का अद्भूत समन्वय है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. अनिल दत्त मिश्रा पूर्व उपनिदेशक, राष्ट्रीय गांधी संग्रहालय, नई दिल्ली ने कहा कि कोई भी कार्य ईश्वर के इच्छा के बिना संभव नही है और यदि सही अर्थों में भारतीयता को समझना है तो अनादिकाल से चली आ रही वैदिक परम्परा के साथ–साथ नाथ परम्परा का भी अनुसरण करना होगा। क्योंकि इस परम्परा का मूल, धर्म परोपकार, मानवता, समरसता, ज्ञान का अर्जन और त्याग का है। वर्तमान परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए हैं जिसकी पुर्नस्थापना के लिए नाथ परम्परा और उसके आदर्श अपनी अग्रणी भूमिका निभा सकतें है। इस कार्य के लिए उन्होंने युवाओं, शिक्षकों को सलाह दिया कि इस कार्य के लिए आगे आयें उन्होंने रविन्द्र नाथ टैगोर के इस वाक्य का उदाहरण देते हुए कहा कि मैं भारत से प्रेम करता हूँ क्योंकि यह ज्ञान की संस्कृति है। चाणक्य के बाद नाथपंथ पहला ऐसा पंथ है जिसने भारतीय राजनीति में पदार्पण किया। इनके विचार क्रांतिकारी हैं। इस पंथ का हर सन्यासी समस्त सामाजिक बंधनों का परित्याग कर केवल मुक्ति मार्ग का अनुसरण करता है। मानव

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

का मूलधर्म दूसरों की सेवा करना है। इसी से राष्ट्र में नव चेतना का विकास होता है। उन्होंने कहा कि नाथ पंथ का मानना है कि शिक्षक को नैतिक होना चाहिए क्योंकि वही संस्कृति और राष्ट्र का संवाहक होता है। इन्होंने भारत शब्द को परिभाषित करते हुए कहा कि भारत शब्द भ अक्षर से बना है जिसका अर्थ होता है ज्ञान अर्थात भारत ज्ञान की भूमि है और यही नाथ पंथ का सूत्र है। नाथ पंथ के योगियों ने भारतीयों में सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्र के साथ–साथ सम्पूर्ण समाज को जागृत किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा ने कहा कि नाथपंथ के महापुरूषों ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के पुर्ननिर्माण, शिक्षा के उत्थान तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण में समर्पित कर दिया। इनका यह विचार था कि शिक्षा की उपेक्षा कर राष्ट्र की उन्नति संभव नही है। अतः शिक्षा को सर्वोपरि स्थान प्रदान करते हुए महन्त दिग्विजयनाथ महाराज ने शिक्षा के उत्थान के लिए महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की स्थापना की। क्योंकि शिक्षा में ही समग्र का बोध होता है, और आज भारत के सामने पुनः विश्वगुरू बनने की चुनौती है अतः नाथ पंथ के आदर्श ही ऐसे सोपान हैं जो भारत को पुनः विश्वगुरू के रूप में प्रतिष्ठित कर सकते है।

उद्घाटन समारोह के प्रारम्भ में आगत अतिथियों का स्वागत महाविद्यालय के शिक्षकों व प्राचार्य द्वारा उत्तरीय और स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया गया। प्रस्ताविकी और सम्पूर्ण रूपरेखा व्याख्यानमाला के संयोजक डॉ. सत्यपाल सिंह ने किया। संचालन डॉ. अर्चना सिंह ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. विवेक कुमार शाही ने किया। इस अवसर पर महाविद्यालय के शिक्षक डॉ. रामलाल गाडिया, डॉ. गीता सिंह, डॉ. शुभ्रा श्रीवास्तव, डॉ. धीरेन्द्र सिंह, डॉ. सुभाष चन्द्र, डॉ. धर्मचन्द्र विश्वकर्मा, डॉ. पियूष सिंह, श्री अवधेश शुक्ला, श्री इन्देश पाण्डेय, डॉ. संजय कुमार त्रिपाठी, श्री विवेकानन्द शुक्ला, डॉ. शैलेश सिंह, डॉ. कमलेश मौर्या, डॉ. पवन पाण्डेय, डॉ. प्रियंका सिंह, डॉ. रूक्मिणी चौधरी, डॉ. अखिल श्रीवास्तव, डॉ. चण्डी पाण्डेय, डॉ. मुरली मनोहर तिवारी सहित छात्र एवं छात्रांए उपस्थित रहे।

डॉ.(वीणा गोपाल मिश्रा)
प्राचार्य